International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 6 Ser. V || June 2020 || PP 67-70

भारतीय संस्थापन ;इन्स्टॉलेशनद्ध कला –एक समीक्षा

डॉ हेमन्त कुमार राय
एसोसिएट प्रोफेसर,
एम.एम.एच. कॉलेज,
गाजियाबाद, उ.प्र.

विश्व के आधुनिक कला इतिहास में बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भिक दौर रचनात्मक क्रान्ति से जुड़ा रहा है यूरोप में बीसवीं शताब्दी में मूर्तिशिल्प कला के मूलभूत तत्वों को लेकर इन्स्टॉलेशन कला नैसर्गिक रूप में उभर कर आई। इन्स्टाल अर्थात् स्थापित करना इस कला को हिन्दी भाषा में संस्थापन ;स्थापनाद्ध कला भी कहा जाता है इस कला में रंगमंच प्रतिकृतियों, नाटक व घटना आदि के मौलिक तत्वों को एकत्रित कर निर्माण किया जाता है। यह कला क्षणभंगुर व अस्थायी हो सकती है जिसे छापा कृतियों व चलचित्रों के माध्यम से स्थिर किया जाता है इसमें पार्शिव कला ;म्तजी ।तजद्ध वैचारिक कला ;ब्वदबमचजनंस ।तजद्ध अतिसूक्ष्मवाद के तत्वों का भी संयोग रहता है इसका उद्देश्य धर्मिक व मूर्तिशिल्प कला से साम्य रखने वाली यह कला व्यावसायिकता के विपरीत नष्ट किये जाने वाले पदार्थ के प्रयोग से एक नवीन अवधरणा को अभिव्यक्त करती है। स्वभावतः इन्स्टॉलेशन कला में अस्थायित्व व सौम्यता के कारण कुछ सीमाएँ भी है। भारत में इन्स्टॉलेशन कला को लगभग गत बीस वर्ष से भावभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में ग्रहण किया गया। भारत में प्राचीन परम्परागत स्थापना कला रूप लोक कला, धर्मिक व अनुष्ठानपरक संस्कारों के रूप में एक भिन्न अभिव्यक्ति करते हैं।

किन्तु समकालीन कला 1990 ई0 में श्री नैकचन्द्र द्वारा चण्डीगढ़ में व्यर्थ व नष्ट करने योग्य पदार्थो द्वारा रॉक गार्डन के निर्माण के रूप प्रस्तुत हुई यह इन्स्टॉलेशन स्थिर है इसी प्रकार एम0एम0 हुसैन ने थिएटर ऑपफ दि सब्स(शीर्षक से नई दिल्ली में इन्स्टॉलेशन किया जो भारतीय समकालीन कला में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था। 1991 ई0 में विवान सुन्दरम ने मेमॉरियल नामक स्थापना करके राजनैतिक वैश्वीकरण परिदृश्य को कला को उजागर किया इसके पश्चात् तो इन्स्टॉलेशन कला प्रदर्शन का सिलसिला रूका ही नहीं समकालीन संस्कृति जो नींव परिवर्तनशील है की उपज होने के परिवर्तनशीलता को महत्वपूर्ण माना जाता है।

आम भारतीय मध्यवर्गीय जीवन में रसोई के बर्तनों को सुबोध ने कला के एक बड़े अनुभव में बदल दिया है। ''एक जमाने में मैंने अपनी एक कविता इच्छा में लोटे को आम भारतीय जीवन के गहरे और मार्मिक प्रतीक के रूप में देखा। 1979 में दिल्ली की धूमीमल गैलरी में जगदीश स्वामीनाथन के चित्रों की एक प्रदर्शनी में कविता पाठ का भी कार्यक्रम था। मैंने पहली बार इच्छा को वहीं पढ़ा था। बाद में मुझे गिलास, कढ़ाई, कटोरे सरीखी चीजों में जीवन का एक बड़ा रूपक नजर आने लगा था। पर कवि के रूप में आप अलग–अलग बर्तनों की एक श्रृंखला लिखेंगे तो अभिव्यक्ति कुंद होने लगेगी। पर एक कलाकार का कैनवास ज्यादा बड़ा है। वह अभिव्यक्ति की इस सीमा से निर्देशित नहीं है। इसलिए सुबोध ने बर्तनों की 'स्टेनलैस स्टील दुनिया की चमक' में एक अलग तरह के सपने और यथार्थ को देखा है।

प्रारंभ में संस्थापन कला में पुराने या इस्तेमाल किये हुए उपादानों को एक नवीन अर्थ में प्रस्तुत किया जाता था किन्तु कालान्तर में यह संगम बना मूर्तिकला का, रंगमंच का, छाया चित्रों का साथ ही दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाली अनेकानेक वस्तुओं का आज कलाकार संस्थापन में ध्वनि प्रभाव तथा वीडियोग्रापफी व स्वयं भी उसमें पात्राता कर रहे हैं यही नहीं उन्हें देखने वाले कलाप्रेमी भी उसमें हिस्सेदारी करते हैं। कलाकारों ने इस विध में स्वयं को एक नवीन रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें परंपरावादी दृष्टिकोण का स्थान प्रयोगवादी दृष्टिकोण ने ले लिया है तथा कलाकारों ने उसमें कुछ नवीन करने का साहस किया है। उन्होंने अपने मुक्त चिन्तन से राजनैतिक, सामाजिक, रीतियों कुरीतियों पर कुठाराघात करने के लिए ईंजल, कैनवास छोड़कर तकनीक को आत्मसात किया है। सच ही तो है चाक्षुष कलाओं का प्रतिनिध्वि अब, परपफारमेंस, मिक्स मीड़िया, पफोटोग्रापफी, इंस्टालेशन जैसे माध्यम ही कर रहे हैं यानी तकनीक कला में निरन्तर हावी होती जा रही है।

हमारे देश में अनेकों कलाकारों ने इस विध को अपनाया है। जिनमें भारत के वरिष्ठ महान कलाकार स्व0 एम0एपफ0 हुसैन, अमरनाथ सहगल, सतीश गुजराल, विवान सुन्दरम, वेद नायर, गोगी सरोजपाल, रत्नबलि कान्त आदि ने संस्थापन को अपनी कला में विध स्वरूप अपनाया इन प्रतिष्ठित कलाकारों के अलावा शमशाद हुसैन, लतिका कट्ट,

शहबा, एन0 पुष्पमाला, सोमान, राजेन्द्र टिक्कू, वालसन कोलरी, एन0एन0 रिमजान, शीला गौडा, नरेश कपूरिया, अपर्णा कौर, रूम्मन, हुसैन, सुबोध केरकर, सुबोध गुप्ता आदि कलाकारों की श्रृंखला की श्रृंखला है जिन्होंने संस्थापन कला को अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में चुना है। भारत में स्वतन्त्राता के पश्चात् नये कलाकारों ने कला में प्रयोगवादिता को अपनाया तो इन्होंने संस्थापन कला की ओर भी रूख किया भारत के प्रसि(चित्राकार स्वर्गीय श्री एम0एपफ0 हुसैन साहब भी स्वयं को इसमें प्रयोग करने से न रोक सकें उन्होंने 90 के दशक में दो संस्थापन बनाये जिनमें जेमंजतम वि ।इनतक व ैीमूंजंउइंतप थे।ैीमूंजंउइंतप में उन्होंने गजों गज सपफेद कपड़ा बॉम्बे गैलरी में लटकाया जिसके विषय में एक समीक्षक ने कहा कि उसमें देखने या महसूस करने जैसा कुछ नहीं था यह एक व्यक्ति विशेष की सोच थी किन्तु संस्थापन कला की तरपफ भारतीय कलाकारों का रूझान से अपनी कला का प्रदर्शन कर रही है रत्नाबलि कान्त ने अपने जीवन का एक लम्बा अन्तराल यूरोप में बिताया जहाँ उन्होंने मध्यकालीन यूनानी मूर्तियों का अध्ययन किया, अपने उन अनुभवों तथा पारम्परिक भारतीय मूर्तिकला व रंगमंच का सम्मिश्रण उन्होंने अपनी संस्थापन कला में किया उन्होंने अपनी मल्टी मीडिया प्रस्तुतियों में उपर्युक्त का मिश्रण किया उन्होंने अनेकों स्थानों पर अपनी संस्थापन कला का प्रदर्शन किया जैसे 'डैथ ऑपफ डिजायर' कमानी ऑडिटोरियम के नो पार्किंग एरिया में इसी नाम से उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के चित्राकला विभाग में भी इसका प्रदर्शन किया, पेन विद इन पफोर का प्रदर्शन उन्होंने आइपफैक्स दिल्ली में किया, रैड अण्डर द गोल्डन हैलो का प्रदर्शन उन्होंने बिरला अकेडेमी ऑपफ आर्ट एण्ड कल्चर में किया उन्होंने एक पुस्तक म्उचीमउमतंस ैजमचे मदकनतपदह पउचतपदजे रू प्देजंससंजपवद च्मतविउंदबमे 1985–2005 लिखी जिसे राजा पफाउण्डेशन के सौजन्य से प्रकाशित किया गया इसमें उन्होंने अपनी संस्थापन कला के 20 वर्ष के अनुभवों को प्रस्तुत किया है।

भारतीय कलाकारों में संस्थापन कला में लगातार काम करने वाले एक विश्व प्रसि(कलाकार हैं विवान सुन्दरम्। वे एक ऐसे भारतीय कलाकार हैं जिनकी संस्थापन कलाकृतियाँ सदैव राजनीति से प्रेरित रही है यही नहीं वे सपफदर हाशमी मैमोरियल ट्रस्ट के संस्थापक सदस्यों में एक हैं, उनमें अन्याय के प्रति आवाज बुलन्द करने की क्षमता है इसी कारण वे छात्रा आन्दोलन से भी जुड़े रहे हैं इन्हीं सबका मिला जुला प्रभाव उनकी संस्थापन कला में देखने को मिलता है वे अपने संस्थापनों में पुरानी इस्तेमाल का हुई चीजों के प्रयोग को नकारते हैं उनका मानना है कि संस्थापन एक मूर्ति का विस्तारित स्वरूप है संस्थापन मूर्ति की भांति एक अवयव से नहीं बनता वह अपने स्वरूप में अनेकों स्तरों से निकलने के बाद आता है जो जनमानस के चारों तरपफ होता है लोग उसमें से निकलकर उसकी सम्पूर्णता को अनुभव करते हैं। यह कहीं भी कैसा भी हो सकता है किन्तु उसकी तार्किक महत्ता अवश्य होनी चाहिए। 1991 में उन्होंने खाड़ी यु(से प्रेरित होकर हैण्ड मेड शीट, इंजन ऑयल चारकोल आदि से एक कलाकृतियाँ तैयार की जिसका उद्देश्य यु(में नष्ट हुए संसाधनों से सबको अवगत कराना था। उनके एक संस्थापन में उन्होंने कलाकृति का कुछ हिस्सा दीवार पर लगाया है तथा कुछ जमीन पर रखा है जिसमें उन्होंने चित्रा व मूर्ति दोनों के पारंपरिक स्वरूप को त्याग कर एक नवीन प्रस्तुति की है वे अपने संस्थापनों द्वारा तत्कालीन समाज में व्याप्त हिंसा व हिंसात्मक गतिविधियों पर तीखा प्रहार करते हैं उनके संस्थापन डमउवतपंस जो कि टिन, इनेमल पेंट व तीव्र प्रकाश द्वारा निर्मित किये गये हैं मानव के मानव पर किये जा रहे अत्याचारों के प्रति उनकी वेदना को प्रस्तुत करते हैं इसी श्रृंखला में उनके डंनेवसमनउ नामक संस्थापन बने हैं उनके संस्थापनों में उपस्थित लाक्षणिक अवयव बौ(िक व अभिप्राय पूर्ण होते हैं। उन्होंने ठवंज प्देजंससंजपवद नामक श्रृंखला बनाई है उन्होंने ैइ ज्मततंपद ीवू में छमू छमू क्मसीप रू त्वववउ ूपजी ठमक नामक संस्थापन प्रस्तुत किया जिसमें सात सहायक कलाकारों ने भी प्रतिभागिता की यह उनका वास्तु शिल्प विद्या सम्बन्धी चार कमरों का संस्थापन था जिसे उन्होंने लकड़ी, मिक्स मीडिया, एक्रैलिक शीट, रबर, डिजिटल प्रिन्ट, पफोटोग्राफ्रस तथा दो मॉनीटर, लाईट, ध्वनि प्रभाव आदि के द्वारा तैयार किया। उनको बचपन से ही काष्ठ कला में रूचि होने के कारण उन्होंने भवनों पर आधरित संस्थापनों में प्रयोग किया और इस प्रकार के संयोजन बनाए। यही नहीं, उन्होंने अपने पारिवारिक पफोटो एलबम में से अमृता शेरगिल जी की डिजिटल पफोटो श्रृंखला त्मजांम वि ।उतपजं ैमतहपस भी तैयार की है जिसके द्वारा वे दर्शक को अतीत में ले जाकर उस काल का दर्शन कराते हैं विवान सुन्दरम भारत के ऐसे कलाकार हैं जो कि संस्थापन कला में लगातार कार्यरत हैं वे न केवल उसमें नवीन प्रयोग करते जा रहे हैं अपितु इस कला विध को भारत में प्रेषित व पल्लवित करके अन्य देशों में भी भारतीय संस्थापन कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।

संस्थापन कला को अपनी कला विध के रूप में अपनाने वाले समकालीन कलाकारों ने एक अन्य प्रतिष्ठित नाम हैं सुबोध गुप्ता का। उन्होंने नब्बे के दशक में अपनी कला शिक्षा बिहार प्रान्त के पटना जिले के कला विद्यालय से की, उनके रूचि रंगमंच में थी जहाँ उन्होंने बतौर अभिनेता अभिनय भी किया तथा रंगमंच के सैट भी डिजाइन किये उन्होंने अपनी कला का आरम्भ पेण्टिंग से किया तथा प्रयोगधर्मिता के युग में स्वयं को प्रतिष्ठित करते हुए संस्थापन कला में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। आज वे संस्थापन कला के विदेशी कला बाजार में भारत के प्रतिनिधि कलाकार माने जाते हैं, उन्होंने 2005 में विनेस बिनाले नामक द्वैवार्षिकी अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में अपने संस्थापन को प्रदर्शित किया और

वहाँ भारतीय संस्थापन कला को एक विशिष्ट पहचान दिलाई। वे स्वयं को भारतीय मध्यमवर्गीय परिवारों से जोड़ते हुए उनमें प्रयोग होने वाले स्टील के बर्तनों को अपने संस्थापनों में विशेष रूप में प्रयोग करते हैं उन्हें अपनी कल्पना शक्ति के बल पर अनेकों रूपों में प्रयुक्त करते हुए सजीव प्रभावशाली कलाकृति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने आर्ट समिट 2011 में साइकिल रिक्शा पर ढेरों पानी के लोटे लादकर एक अनूठे संस्थापन का प्रदर्शन किया कलाकार ने गरीब अमीर सभी की मूलभूत आवश्यकता जल पर सबका ध्यान केन्द्रित कराया या यह भी कहा जा सकता है कि पूरे विश्व में पफैले जल के संकट या पानी की महत्ता से सभी को अवगत कराया इस समस्या की तरपफ कलाकार ने अपने ही ढंग से व्यंग प्रस्तुत किया उन्होंने अपनी संस्थागत कला में पेन्टिंग, मूर्ति शिल्प, वीडियोग्रापफी तथा इलैक्ट्रॉनिक प्रभावों का मिश्रण किया है सुबोध गुप्ता ने भारतीय जनजीवन में रोजमर्रा की काम आने वाली वस्तुओं जैसे एल्युमिनियम की केतली, दूध के डिब्बे, एम्बेसडर कार, बिहार में व्याप्त हिंसा के प्रतीक के रूप में देसी पिस्तौल का प्रयोग भी अपने संस्थानों के करा है। उनकी विशेषता ही यह है कि वे अपने मूल से जुड़े हुए कलाकार हैं उन्होंने भारतीय जीवन के साथ जुड़कर ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कला प्रेमियों से संप्रेषण स्थापित किया है टाइम्स ऑपफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित होने वाले देहली टाइम्स के 22 अगस्त 2011 को सुबोध गुप्ता की कृति अलीबाबा जो कि च्तपे च्वउचपकवन ब्मदजतम के एक आर्ट शो में प्रदर्शित हुई थी वह प्रकाशित की जहाँ न केवल उनकी कृति की भूरि–भूरि प्रशंसा हुई बल्कि भारतीय संस्थापन कला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी कलाकार को प्राप्त हुआ। सुबोध गुप्ता अपनी कला और उनकी बुनियादी चिन्ताओं में जितना स्थानीय होते चले गये उतना ही वे सार्विक भी हो गये उनकी कला आत्म प्रदर्शन पर आश्रित नहीं है। उनकी चिन्ताएं अध्कि अर्थपूर्ण और गहरी हैं।

समकालीन कलाकारों में महाराष्ट्र के कलाकार सुबोध केरकर ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने अपने चिकित्सीय व्यवसाय की छोड़कर अपने कला शिक्षक पिता की प्रेरणा से कला को अपने जीवन का ध्येय बना लिया। सुबोध केरकर ने कलाकार के रूप में अनेक विधओं में अपना हाथ अजमाया, परन्तु उनका मन सर्वाध्कि संस्थापन कला में ही रमा तथा उन्होंने इसी को माध्यम के रूप में चुनकर अपनी कला प्रतिभा को प्रदर्शित किया वे स्वयं को समुद्र व ध्रती का कलाकार मानते हैं समुद्र का जल उसके किनारों का रेत ही उनकी संस्थापन कला के मुख्य अवयव हैं वे समुद्र तट को ही अपना स्टूडियों मानते हैं उनका कहना है कि समुद्र ही मेरी प्रेरणा है वे उसे अपने गुरू के रूप में देखते हैं व उसके प्रति अपार श्(ा रखते हैं। सुबोध केरकर ने गोवा, दिल्ली, मुम्बई के अलावा नार्वे, जर्मनी व स्विटजरलैण्ड में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया उन्होंने आध किलोमीटर लम्बा एक संस्थापन भारत के अन्तर्राष्ट्रीय पिफल्म समारोह 2004 व 05 के अवसर पर गोवा में बनाया उन्होंने मुम्बई के प्रियदर्शनी पार्क में भी एक इतना ही लम्बा संस्थापन मुम्बई महोत्सव के अवसर पर बनाया। वे एक भ्रमणशील कलाकार हैं उन्होंने अपनी सिक्किम यात्राा में तिब्बत के प्रार्थना के झण्डे देखे तथा उन्हीं से प्रेरणा लेकर अपना नया संस्थान न्दविसकपदह वि ंक्तमंउ गोआ के वैगटर बीच पर बनाया वे सिक्किम से प्रार्थना के झण्डे जिन्हें लुंगटा कहा जाता है लेकर आए और बैगटर हिल ;पहाड़ीद्ध से नीचे की ओर घुमावदार रूप देकर लगाया लाल नारंगी व पीली रंगत के 600 झण्डे उन्होंने तिब्बत के क्रान्ति दिवस 10 मार्च को प्रदर्शित किये जिनके साथ 200 मशालों को हाथ में लेकर प्रार्थना गीत गाते हुए तिब्बत की पारंपरिक पोशाक पहने तिब्बती लोग भी चले उनके इस संस्थापन के द्वारा उन्होंने एक ऐसा स्वरूप प्रस्तुत किया जहाँ प्रतीत हुआ कि समुद्र भी तिब्बती जनता की स्वतन्त्राता के लिए प्रार्थना कर रहा हो। सुबोध केरकर ने समुद्र को साक्षी बनाकर अपने देश के एक हिस्से में दूसरे हिस्से की व्यथा को सबके समक्ष प्रदर्शित किया। उन्होंने बेसिन बिनाले के समुद्र कला महोत्सव 2006 में पुरस्कार भी प्राप्त किया। वे अपने संस्थापनों में मानव निर्मित उपादानों का प्रयोग कम से कम करने का प्रयत्न करते हैं यही नहीं वे अपने संस्थापनों को कैनवास पर भी चित्रित करते हैं तथा अपनी कलाकृतियों के माध्यम से सामाजिक राजनैतिक मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

आधुनिक कला के उपादानों में संस्थापन कला अपना विशिष्ट वैशिष्ट्य के साथ उभरी है जिसमें प्रयोग की अपार संभावनाएं है जहाँ कलाकार केवल रंग तूलिका कैनवास का ही मोहताज नहीं रहा है अपितु वह अपने परिवेश में उपलब्ध् प्रत्येक वस्तु को कलाकृति के रूप में प्रस्तुत कर रहा है जो कि उसकी कल्पना शक्ति एवं कुशलता पर निर्भर करती है मेरे विचार में संस्थापन कला भारत में कोई नया माध्यम नहीं है क्योंकि हमारे यहाँ मनाए जाने वाले प्रत्येक सांस्कृतिक पर्व, पूजापाठ सभी में जिस प्रकार से वस्तु संकलन व उनकी प्रस्तुति होती हैं वे अपने आपमें एक प्रकार के संस्थापन ही होते हैं। केले के पेड़ों व कलशों से सजा मण्डप अपने आप में एक संस्थापन है। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय कलाकार उसमें प्रयोग कर–कर के उसे नित नया जन्म दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- मार्डन स्कल्पचर : हबैटै रीड, ऐंड हडसन ;1985द्ध
- इलस्ट्रेटड डिक्शनरी ऑपफ आर्ट टर्म्स, एडबरी प्रेस, लंदन ;1981द्ध

- त्यौहार राम मनोहर सिन्हा, समकालीन कला के आयाम
- विनोद भारद्वाज, समकालीन भारतीय कला
- ममता चतुर्वेदी, समकालीन कला, ;2006द्ध
- प्राणनाथ मांगो, समकालीन कला, ;2006द्ध